B.A Part-I
Prof Randhir Kumar Singh
Dept of sociology.
Patna college. P.U
M.- 9546991571.

TOPIC – Religion and morality related to each other..

प्रत्येक मानव-सम्बन्ध के मूल में दो विचार कार्य करते हैं – (A) वास्तव में क्या विद्यमान है और (B) होना क्या चाहिए। प्रत्येक समुदाय अपने सदस्यों द्वारा पालन के लिए आपस-सम्बन्धी कुछ नियम निर्धारित करता है। परिवार कहता है कि बच्चों को माता पिता की आज्ञा माननी चाहिए और पति पत्नि एक दूसरे से निष्ठा रखे। स्कूल अथवा पाठशाला का नियम है कि विद्यार्थी अपने अध्यापकों का सम्मान करे। सरकार कहती है कि राजनीतिज्ञ अपने पद को सार्वजनिक अमानत समझें। चर्च और मस्जिद चाहती है कि सदस्य उस चर्च और मस्जिद के भले के लिए कार्य करें।

प्रत्येक समुदाय में सामाजिक व्यवहार के कुछ न कुछ नियम पाये जाते हैं। इन नियमों तथा सिद्धान्तों का सम्बन्ध अच्छाई और बुराई से होता है इसे नैतिकता कहा जाता है इन नियमों को समुदाय बहुत सीमा तक स्वीकार कर लेते हैं। ईमानदारी, निष्ठा, श्रेष्ठता आदि कुछ नैतिक अवधारणाएँ हैं।

Relation with Religion →

Their Inter-Connecting → धर्म और नैतिकता का परस्पर सम्बन्ध है। जो अच्छा है वही ईश्वर की भी इच्छा है। अतः ईश्वर की इच्छा पूरी करना तथा नैतिकता के कार्य करना एक ही प्रक्रिया के दो रूप है या पहलू हैं। नैतिकता और धर्म दोनों ही व्यावहारिक हैं तथा उनका सम्बन्ध ऐसे श्रेष्ठ नियम से है जो सरकार के कार्य क्षेत्र से ऊँचा और सरकारी नियंत्रण से बाहर की वस्तु है। नैतिकता धार्मिक विश्वासों को बनाये रखने का मार्ग प्रशस्त करती है; जबकि धर्म अप्राकृतिक मान्यता द्वारा नैतिकता को बल प्रदान करता है। दोनों ही मिलकर मानव व्यवहार को नियंत्रित करते हैं।

P.T.O

Mathew Arnold के शब्दों में धर्म भावना से भरा हुआ नैतिकता है। Benjamine Kidd and अन्य moralists का विचार है कि इन दोनों का परस्पर गहरा विरोध है तथा निकम्मा है और धर्म के नैतिकता का कोई आधार ही नहीं है। Bradley का विचार है कि यह नैतिक कर्तव्य है कि कोई अनैतिक न हो और यह कर्तव्य है, धर्म।"

परन्तु स्पेन्सर, बर्न्ड्स, मिल, हार्कले और चार्लिज ब्रेडले जैसे विचारकों का मत है कि धर्म और नैतिकता का परस्पर कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है और इन दोनों को एक दूसरे से पृथक पृथक रखना तथा मानना चाहिए। उनके मतानुसार धर्म और नैतिकता की उत्पत्ति स्वतंत्र तथा भिन्न स्रोतों से हुई थी। उन्होंने यह मत प्रकट किया कि धर्म से अलग कर देने पर ही नैतिक संहिता या नैतिक नियमावली का विकास बहुत अच्छी तरह और प्रभावोत्पादक ढंग से किया जा सकता है। व्यक्ति जीवन निर्वाह के दौरान ही नैतिक सद्गुण निर्धारित कर लेता है जो बाद में उचित ढंग से ईश्वर द्वारा ठीक करके धर्म में शामिल कर दिये जाते हैं। Ten commandments नाम से प्रसिद्ध नैतिक नियम ईसाई धर्म का भाग बनने से पूर्व रूढ़ियाँ ही थी।

Their Difference ⟶ यदि हम यह बात याद रखें कि कोई कार्य नैतिक दृष्टि से अनुचित होते हुए भी धार्मिक दृष्टि से उचित हो सकता है तो धर्म और नैतिकता में जो अन्तर है वह स्पष्ट हो जायेगा। कभी कभी धर्म ऐसे कार्य के लिये प्रेरित करता है जो सामाजिक हित के विरुद्ध होता है। हिन्दू धर्म छुआ छूत का उपदेश देता है जो नैतिकता के दृष्टिकोण से अनुचित है। पुरातन काल में हिन्दू धर्म ने सती प्रथा की छूट दे रखी थी और धर्म इसके लिये लोगों को उत्साहित करता था जो सामाजिक दृष्टि से अनुचित था,

P.T.O

इसी तरह व्यक्ति बच्चे और बली की प्रथा भी नैतिक दृष्टि से उचित नहीं हो सकता। और स्त्री अपनी पति से कितनी भी दुखी क्यों न हो उसका त्याग नहीं हो सकती, क्योंकि यह एक धार्मिक कार्य है।

नैतिकता के दृष्टि से यह स्पष्ट दिखाई देता है कि एक स्त्री ऐसे क्रूर, निर्दयी, रोगी आदमी से बंधी क्यों रहे? सच्चाई यह है कि नैतिकता व्यक्ति को आगे ले जाती है, परन्तु धर्म उसे ऐसा करने से रोकती है।

धर्म के अन्तर्गत मानव का ~~केवल~~ साथ ही सम्बन्ध नहीं होता बल्कि उच्च अमानविय शक्ति के साथ भी सम्बन्ध स्थापित कर लेता है।

नैतिकता केवल मानव का मानव के साथ ही सम्बन्ध स्थापित कर लेता है।

धर्म ऐसी मान्यता के लिए प्राकृतिक कारण है जिसे supra soial कहा जा सकता है और यह ईश्वर का भय, प्रेतात्माओं का भय अथवा नर्क का भय आदि हो सकता है।

नैतिकता ईश्वर के प्रकोप को मान्यता का स्थान नहीं देती इसकी मान्यता का आधार सामाजिक कुप्रणालों का भय होता है। धर्म के साथ "पाप" तथा नैतिकता के साथ "अनुचित" शब्द सम्मिलित है।

यद्यपि धर्म तथा नैतिकता में अन्तर है फिर भी यह नहीं मान लेना चाहिए कि दोनो में कोई विरोध अन्तर है। कोई भी मनुष्य धार्मिक न होते हुए भी नैतिक रह सकता है परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि धर्म का महत्व स्वीकार ही न किया जाये।
नैतिकता को धर्म से एकदम हटाया नहीं किया जा सकता।
मैकाईवर का कथन है कि " संसार की चेतन क्रिया में विकसित होता हुआ धर्म हमारी एक इकाई के प्रति समुदाय की भावना को बचा सकता है और इस तरह यह नैतिक नियमों के समाधान ही हो जाता है।